JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्रीमती सोफिया शेक

पुरस्कार प्राप्तकर्ता

महिला और बाल विकास एवं कल्याण के लिए पुरस्कार 2022

❖मैं इस वर्ष पुरस्कार के लिए चुनने के लिए सभी जूरी को अपना हार्दिक धन्यवाद व्यक्त कर्ति हुं । यह आने वाले दिनों में वर्तमान समाज के वंचित वर्गों विशेषकर महिलाओं, बच्चे और मजदूर वर्ग के लिए काम करने की मेरी भावना को प्रेरित और तेज करने में एक लम्बा रास्ता तय करेगा।

❖मैंने समाज के वंचित वर्गों विशेष रुप से उत्पीड़ित और दबी हुई महिलाओं को लोकतांत्रिक समाज में अपने अधिकारों का प्रयोग करने, विशेष कौशल प्राप्त करके खुद को सशक्त बनाने के लिए प्रस्तोहित करके अपना छोटा सा योगदान दिया है। मेरे प्रयासों के लाभार्थियों में ज्यादातर महिलाएं, बेसहारा बच्चे शामिल हैं । मैं अपने एनजीओ के माध्यम से घरेलू हिंसा के पीड़ितों से लेकर तलाक तक के पीड़ितों के लिये उन्हें आश्रय, शिक्षा और उनके अधिकारों के बारे में जागरुक करने के लिए लगातार संघर्ष कर रही हूं।

❖जब मैं भद्रक की नजमा बिबि के लिए लड़ रही थी, जिसे शराब के नशे में उसके पति ने अन्यायपूर्ण तरिके से तिन तलाक दिया था, तो मैं समाज में लोगों के एक बड़े वर्ग के विरोध के बावजूद उसे न्याय दिलाने के लिए सुप्रीम कोर्ट गई थी। ऐसे कितने महिलाओं के घर तुटने से बचापाई हुँ। उन्हें सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम बनापाई हु। उनलोगोंने अपनी पहचान बना पाए हैं यह मेरी सबसे बड़ी जीत है। मैं अपने एनजीओ के माध्यम से आर्थिक रुप से सशक्त बनाकर दबे हुए तबके के बीच आवाज उठाने की कोशीश कर रही हुं। इसके परिणामस्वरुप अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए अच्छी संख्या में युवा कार्यकर्ताओं का उदय हुआ है। वे जाति, पंथ और धर्म के बावजूद समाज के सभी वर्गों को जोड़ने के रुप में काम कर रहे हैं। वे अब समाज में हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने से नहीं डरते। इस तरह वे न केवल अपने लिए बल्कि दुसरों के लिए भी सरकार की विभिनगन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं।

❖मैं एक ऐसे समाज का सपना देखती हूं जहां पुरुषों और महिलाओं दोनों के साथ समान व्यवहार किया जाता है और न केवल अपने–अपने परिवारों के कल्याण के लिए बल्कि पुरे समाज और देश के लिए भी महत्वपुर्ण योगदान देता है।

❖अपने जीवन के छोटे से दौर में अपनी यात्रा और अनुभवों से मैंने जो सिखा है, वह यह है कि अगर किसी के पास समाज के लिए कुछ अच्छा करने की इच्छा और संकल्प है, तो पृथ्वी पर कोई भी ताकत उसे रोक नहीं सकती है और सब कुछ उसके दायरे में आ जाएगा।

❖मैं ओडिशा के भद्रक नाम के एक छोटे से शहर से आई हूं जो भारत की अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है जो बहुलबाद, विविद्धता में एक्ता, धर्मनिरपेक्षता और मिश्रित संस्कृति है, खासकर हिंदुओं और मुसलमानों के शांतिपूर्ण और सार्थक सहवास के कारण मैंने बचपन से ही अपने छोटे से शहर भद्रक में अपनी शिक्षा, बातचीत और विभिन्न गतिविद्धियों में भाग लेने के दौरान धर्मनिरपेक्षता, बहुलवाद की अवधारनाओं को अपने अंदर समाहित किया है।

❖ मै इस अवसर पर अपने पिता को धन्यवाद देना चाहती हूं जो ओडिशा में सलाम भाई के नाम से लोकप्रिय हैं, जिन्होंने मुझे समाज सेवा के क्षत्र में काम करने के लिए लगातार प्रोस्ताहित किया। मुझे सभी के लिए उनके व्यक्तिगत प्रेम का गुण विरासत में मिला है, चाहे अनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। मैं अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी समान रुप से धन्यवाद देती हुं कि उन्होंने मुझे इस क्षेत्र में काम करने के लिए प्रोस्ताहित किया।

❖ मैं स्थानीय प्रसासन और अपने इतने सारे शुभचिन्तकों का भी अभारी हुं, अन्होने हमेसा मुझे सहयोग और प्रोस्ताहित करते हैं। मैं उन सभी लोगों को तह दिल से धन्यवाद देती हुं।

❖ मैं अपने आलोचकों और विरोधियों को भी समान रुप से धन्यवाद देती हुं जिन्होंने बाधाओं की परवाह किए बिना आगे बढ़ने के मेरे संकल्प को मजबूत किया है।
धन्यवाद के साथ!

❖ मैं आजके युबपीड़ी को यही कहुंगी की उपर वाले ने आपको उतनी प्यारी जीन्दगी दी है अपनी ताकत को पहेचानों (आप अपना सहि रास्ता चुनो) और समाज में हो रहे हर जुल्म के खिलाफ आवाज उठाओ, गाँधी जी के विचारधारा को लोगों के पास पहुँचाओ और सच्चाई के लिए लढ़ो नई भारत का नीर्माण करना हर ब्यक्ती का कर्तब्य है जीस्से हम सबको मिलकर काम करना होगा आखिर में एक सायरी बोलना चाहुँगी . . . . . .

“खुदी को कर बुलन्द इतना के हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पुछे बता तेरी रेजा क्या है”

Ms. Sophia Shaik

Recipient

Development and Welfare of Women and Children Award 2022

I express my deepest thanks to the award jury for selecting me for this year's award. This would go a long way in motivating and accelerating my spirit to work for the deprived sections of the current society particularly women, children and working class in coming days.

I have contributed in my small way by emboldening the deprived classes of the society particularly the oppressed and suppressed womenfolk to exercise their rights in a democratic society, empower themselves by acquiring special skills. Beneficiaries of my efforts include mostly women, destitute children. I have been fighting consistently for the cause of victims spanning from victims of domestic violence to that of talaq by getting them shelter, education and conscientize the working class about their rights, through my NGO.

When I was fighting for Nazma of Bhadrak who was unjustly divorced by her husband under the influence of alcohol, I went up to the Supreme Court to get her justice despite opposition from a big section of people in the society. I have been trying to generate voice among the suppressed section by empowering economically through my NGO. This has resulted in emergence of a good number of young activists to stand against injustice. They have been working as adhesive to joint all sections of the society irrespective of caste, creed and religion. They are now not afraid of raising their voice against the injustice in society. In this way not only, they are enjoying the benefits of various welfare schemes of the government for themselves but also for others.

I dream of a society where both men and women are treated in equal footing and contribute significantly not only for the welfare of their respective families but also to the society and the country as a whole.

From my journey and experiences in my small period of life what I have learnt is that if one has the will and resolve to do something good for the society then no force on earth can check him/ her and everything would fall in his/her line.

I come from a small city named Bhadrak in Odisha which represent the very concept of India that is pluralism, unity in diversity, secularism, and composite culture particularly because of peaceful and meaningful cohabitation of Hindus and Muslims.

I have ingrained the concepts of secularism, pluralism in me in course of my education, interaction, and participation in various activities in my small city Bhadrak since my childhood.

I would take this opportunity to thank my father popularly known as Salambhai in Odisha for teaching and consistently encouraging me to work in the field of social service. I take pride in inheriting his personal quality of love for all irrespective of their background. I also equally thank my other family members for encouraging and letting me to work in this field.

I am also grateful to the local administration and so many of my well-wishers but for whom I would not have been able to catch your attention for this prestigious award.

I also equally thank my critics and opponents who have strengthened my resolve to proceed ahead without caring for the obstacles.

With thanks.